सम्मतियाँ

जीवन को संवारने वाली अनूठी कृति

प्रस्तुत कृति में प्रख्यात वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक चिन्तक प्रो. पारसमल अग्रवाल ने अनेकान्त को पारिभाषिक शब्दावलियों के गहन जंजाल से निकालकर जीवन की समस्याओं का समाधान करने वाले एक उपाय के रूप में प्रस्तुत किया है। सरल, सुबोध एवं प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखी गई इस कृति को पढ़ते हुए पाठक इसे अपने जीवन की समस्याओं की विवेचना करने वाली कृति के रूप में पाता है। तनाव, चिन्ता, भय एवं अवसादग्रस्त व्यक्ति इस कृति को पढ़कर अपने जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाकर सुखी, समृद्धिपूर्ण, शान्त जीवन जी सकता है यही इस कृति का लक्ष्य है।

डॉ. अनुपम जैन
सम्पादक - अर्हत् वचन

प्रस्तुत कृति में डॉ. अग्रवाल द्वारा पाश्चात्य शैली में पूर्व का मक्खन प्रस्तुत हुआ है। अध्यात्म का इतना सरल व रोचक शैली में वर्णन अत्यन्त दुर्लभ है।

प्रकाशचन्द्र झाँझरी
अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महासमिति
उज्जैन संभाग के पूर्व अध्यक्ष

अध्यात्म से समृद्धि, स्वास्थ्य एवं शान्ति

भाग 1 : अनेकान्त समझ

डॉ. पारसमल अग्रवाल
प्रोफेसर भौतिक विज्ञान (Retd.)

लेखक परिचय

डॉ. पारसमल अग्रवाल

जावद (म.प्र.) में अग्रवाल (जैन) परिवार में जन्में, डॉ. पारसमल अग्रवाल ने 1968 में M.Sc. भौतिक विज्ञान परीक्षा में विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया, रसायन भौतिकी विषय में Ph.D., भीलवाड़ा, अजमेर, कोटा एवं झालावाड़ के राजकीय महाविद्यालयों एवं विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में 24 वर्ष रिसर्च एवं अध्यापन के अतिरिक्त ओक्लाहोमा स्टेट यूनिव्हर्सिटी, स्टिलवाटर, संयुक्त राज्य अमरीका में रिसर्च एशोसिएट, रिसर्च प्रोफेशनल एवं विजिटिंग प्रोफेसर पदों पर 14 वर्ष की सेवा।

विज्ञान के क्षेत्र में चार पुस्तकें, तथा अमरीका एवं यूरोप के उत्कृष्ट जर्नलों में 70 शोध पत्र प्रकाशित। उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी लखनऊ द्वारा पुरस्कृत ।

अध्यात्म के क्षेत्र में आचार्य कुन्दकुन्द, आ. उमास्वामी, आ. समन्तभद्र, आ. नेमिचन्द्र, आ. शुभचन्द्र, आ. अमृतचन्द्र, आदि द्वारा रचित ग्रन्थों के अतिरिक्त श्रीमद्भगवद्गीता, रामचरितमानस एवं पाश्चात्य साहित्य के अध्येता। अध्यात्म एवं विज्ञान से संबन्धित विषयों पर शताधिक लेख एवं शोधालेख प्रकाशित । कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा दो बार सर्वश्रेष्ठ लेखक के रूप में सम्मानित । सम्प्रति कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ निदेशक मंडल के माननीय सदस्य।

सम्मतियाँ

प्रस्तुत कृति ''अध्यात्म से समृद्धि, स्वास्थ्य एवं शान्ति: अनेकान्त समझ, भाग–1'' में डॉ. पारसमल अग्रवाल ने विश्व के सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त तथा विश्वगुरु स्वरुप अनेकान्त का समन्वयात्मक वर्णन विश्व मानव के लिए आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से सरल भाषा में छोटे–छोटे उदाहरणों के माध्यम से करके महान् उपकार किया है। जैन तीर्थंकरों, महात्मा बुद्ध आदि ने तत्कालीन जन–भाषा में उपदेश करके जिस प्रकार जन–जागृति का कार्य किया था और पूर्वाचार्यों ने भी उस का अनुकरण किया तथा शिष्यों को भी निर्देश दिया कि युगानुकूल जनभाषा में सिद्धान्तों का प्रतिपादन करें जिससे सामान्य जनों को कठिन विषय समझ में आये। उसी पद्धति का अनुसरण डॉ. अग्रवाल ने इस कृति में किया है। डॉ. अग्रवाल के समीक्षा के लिये आग्रह के कारण जब मैंने इस कृति का अध्ययन-अध्यापन संघ में कराया तब मुझे यह सब अनुभव हुआ।

आचार्य श्री कनकनन्दीजी महाराज

यह कृति एक नूतन प्रयोग है जिसमें डॉ. अग्रवाल ने जैनदर्शन के महत्वपूर्ण अंग अनेकान्त को भौतिक विज्ञान के साथ जोड़ते हुए जो तालमेल बिठाया है वह एक अनुपम उपलब्धि है। हमने अभी तक अनेकान्त को धार्मिक सीमाओं तक देखा है लेकिन मनुष्य मात्र के जीवन में उसका कितना उपयोग है यह पहली बार प्रस्तुत हुआ है।

डॉ. शेखरचन्द्र जैन
सम्पादक तीर्थंकर वाणी

यह पुस्तक पाठकों के दृष्टि परिवर्तन और उन्हें तनावमुक्त करने में मार्गदर्शक की भूमिका निभायेगी, ऐसा मेरा विश्वास हैं।

डॉ. नारायण लाल कछारा
जैन कर्म सिद्धान्त
अध्यात्म और विज्ञान के लेखक